B.A. (Hons) Part II

1.

M. Europe. Paper IV

इटली का एकीकरण > विभिन्न अवस्था.

मैटरनिक इटली को एक भौगोलिक अभिव्यक्ति कहा करता था और यह बात भी था कि 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इटली नाम का कोई देश नहीं था। इटली कई राज्यों में विभक्त था। इटली के उत्तरी भाग में आस्ट्रिया की प्रबल शक्ति स्थापित थी और अन्य छोटे-मोटे राज्य भी उसके प्रभाव के अन्तर्गत थे। बीच में पोप का राज्य भी शक्तिशाली था। इसके अतिरिक्त संपूर्ण इटली में प्रान्तियतावाद के कारण फूट फैली हुई थी ~~इटली के प्रत्येक भाग में पृथकता एवं प्रांतीय ईर्ष्या की भावना थी~~ और इसलिए राष्ट्रीय एकता की भावना का पूर्णरूप से अभाव था।

प्रथम चरण

इटली पर नेपोलियन बोनापार्ट का अधिपत्य हो जाने से वहाँ पर एक संगठित एवं एकरूप शासन स्थापित हुआ जिसके फलस्वरूप इटली के लोगों में राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता की भावना जाग्रत हुई। इटली गणतंत्र स्थापित करने के बाद नेपोलियन ने अनेक छोटे-बड़े राज्यों को समाप्त कर उन्हें केवल तीन भागों में बाँट दिया। उसने न केवल आस्ट्रिया के प्रभुत्व को, बल्कि पोप के प्रभाव को भी नष्ट किया तथा इटली वासियों में एकता की भावना का संचार किया।

1815 में वियना काँग्रेस ने राष्ट्रीयता की भावना की अवहेलना करके इटली के पुराने राजवंशों को पुनः प्रतिष्ठित कर दिया और उसको छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित कर दिया।

फ्रांस की क्रांति तथा अपने अतीत की गरीमा से प्रेरित लोगों ने कारबोनरी नामक एक गुप्त समिति का निर्माण किया। कारबोनारी के नेताओं ने ही, स्पेन के विद्रोह को देखकर 1820 में नेपल्स में विद्रोह कराया। मैटरनिक ने यूरोपीय संघ की आड़ लेकर विद्रोहियों को कुचल दिया।

गरिमा

स्थानीय विद्रोह का सिलसिला चलता ही रहा। फ्रांस में 1830 में विद्रोह होते ही इटली में एक बार फिर विद्रोह शुरु हुआ। पोप की रियासतों में प्रदर्शन हुए। पारमा और मोडेना के राज्यों से उसके शासक निकाल दिए गए। किन्तु मैटरनिक ने एक बार फिर विद्रोह का कठोरता से दमन कर दिया और यह स्पष्ट हो गया कि व्यापक संगठन और योजनाओं के बिना इटली में नए युग का सूत्रपात असंभव है।

द्वितीय चरण

1830 ई० के बाद इटली के राजनीतिक मंच पर मेजिनी का अवतरण हुआ जिसने राष्ट्रीयता और लोकतंत्रवादी आन्दोलन में एक नई जान फूँक दी। 1831 ई० में उसने "यंग इटली" नामक संस्था की स्थापना की। अब यह संस्था कार्बोनारी के स्थान पर इटली के क्रांतिकारी आन्दोलन का

गरिमा

केन्द्र बन गई। मेजिनी को यह विश्वास था कि इटली के नवयुवकों में प्राचीन गौरव और देश-प्रेम की भावना भरकर देश का स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संगठित किया जा सकता है। मेजिनी की सशक्त लेखनी ने इटली के लोगों में नई जान फूंक दी। उसने राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना, बलिदान करने का साहस तथा राष्ट्रीय एकता की चेतना और दृढ़ विश्वास उत्पन्न किया। जिससे वे इटली से विदेशी शासन का अन्त करने के लिए कटिबद्ध हो गये।

मेजिनी के अलावा और भी साहित्यकार इसी दिशा में कार्यरत थे। यद्यपि इसके विचार भिन्न-भिन्न थे, लेकिन सभी इटली को मुक्त और संगठित देखना चाहते थे। नवगल्फ दल का नेता जिओबर्टी एक पादरी था। वह चाहता था कि आस्ट्रिया को इटली से निकालने के बाद पोप की अध्यक्षता में इटालियन राज्यों का एक संघ बने। लेकिन समस्या यह थी कि नेतृत्व ऐसे राज्यों को दिया जा रहा था जो इटली का सबसे प्रबल राज्य था। इसीलिए जिओबर्टी की बात का अधिक प्रचार नहीं हो पाया।

इटली के कुछ देशभक्त यह चाहते थे कि सारे राज्यों का सार्डिनिया में विलय हो जाए तो एक शक्तिशाली और संगठित राजतंत्र के रूप में इटली का प्रादुर्भाव निश्चित है।

इटली में 1848 की क्रांति के पहले ही एक क्रांतिकारी परिवर्तन शुरू हो गया था। पायस नवम के पोप चुने जाने के बाद ही एक नई हवा बहने लगी। पायस एक उदार व्यक्ति था। उसके प्रशासनिक सुधारों से देशभक्तों की आशाएँ जागृत हुई।

1848 की क्रांति के साथ सारा इटली धधक उठा। नेपल्स और सिसली के राज्य में सुधारवादी नेताओं ने विद्रोह किया और संविधान की माँग की। नेपल्स के शासक फर्डिनेण्ड द्वितीय को उदारवादी संविधान स्वीकार करना पड़ा। इसके पश्चात पीडमाण्ट, टस्कनी और पोप के राज्य में भी संविधानों की माँग बढ़ी और मार्च 1848 तक इन तीन राज्यों में वैधानिक राजतंत्र की स्थापना हो गई। मार्च 1848 में मैटर्निख के भागने की सूचना मिलते ही मिलान में विद्रोह हो गया। वेनिस में भी आस्ट्रिया के शासन का अन्त हो गया और गणतंत्र की स्थापना की गई। पारमा और मोडेना के शासक भी भाग गए। इस समय देश के सभी विचारों के लोग एक स्वर से आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध करने की माँग करने लगे और पीडमान्ट के शासक के नेतृत्व में युद्ध करने के लिए उद्यत हो गए।

1848-49 की असफलता से इटली के देशभक्तों को गहरा आघात लगा। किन्तु उसके कुछ अच्छे परिणाम भी निकले इसके